Mob.No 9934683029
Dated 10/7/2020
Dr Tapati Mukerjee
Associate Professor
Music Deptt. H.O.D
R.M. College, Saharsa

Study Material for B.A Part III (2nd Hons)

Paper 8th Theory

Topic Gharana (घराना) (Previous Note Continued)

उत्तर भारतीय संगीत के प्राचीन, प्रचार की गायन शैलियाँ कई वर्षों से प्रचलित हैं, जैसे ध्रुपद, धमार, ख्याल, ठुमरी, कव्वाली, गजल आदि। सभी का गाने की रीतियों या style भिन्न भिन्न होने के कारण पृथक, पृथक "घराना" का आविर्भाव हुआ है, यहाँ घराना से एक शास्त्रीय संगीत सम्बन्धित है, जिसके अन्तर्गत ख्याल, ध्रुपद, धमार आदि गायन शैलियाँ आती हैं।

ख्याल गायकी का विभिन्न घराना —

(1) ग्वालियर घराना — ख्याल गायकी में ग्वालियर घराना सबसे प्राचीन है, इस घराना की शुरुआत नत्थन पीरबख्श को माना गया है, (जो कि 18 th Century) डा० पराजपे जी के अनुसार ग्वालियर घराना लखनऊ घराना से निकला। लखनऊ के प्रसिद्ध कव्वाली गायक गुलाम रसूल के पौत्र शक्कर खाँ और मक्खन खाँ लखनऊ के प्रसिद्ध गायक थे। इनके पुत्र कादिर बख्श और पीर बख्श सुप्रसिद्ध कलाकार थे, लखनऊ के वातावरण उनके लिए उचित नहीं रहा जिसके कारण उन लोग ग्वालियर दरबार में आ पहुँचे। इन दोनों के गायकी में अन्तर होते हुए भी गंगा-जमुनी संयोग से ग्वालियर घराना बना, ग्वालियर घराने के शिष्य परम्परा में निसार हुसैन खाँ, रामकृष्ण बुआ वझे, शंकर पं० वासुदेव राव जोशी देवजी परांजपे, पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर, पंडित ओमकार नाथ ठाकुर आदि रहे हैं।

ग्वालियर घराने की विशेषताएँ — इस घराने की

खास या प्रमुख विशेषता गायकी के आवाज (4) को छिपाना या दबाना माना है। जिसके कारण इस घराने की गायकों की आवाज, खुली और बुलन्द होती है। आवाज को तीनों सप्तक में ले जाने के लिए विशेष प्रकार की साधना या रियाज किया जाता है। बन्दिश गायन के पूर्व राग के स्वरूप को दिखाने के लिए आलाप गायन अवश्यक होता है। स्थायि और अन्तरा गाने के पश्चात ही गायकी आरम्भ करना ग्वालियर घराना का विशेषता है। स्वरों की बढ़त धीरे-धीरे करने के पश्चात तार सप्तक के स्वरो को स्पर्श किया जाता है। आलापचारी के पश्चात बोल तान तान आदि का प्रयोग किया जाता है, ग्वालियर घराना तानों की स्पष्टता और बहलावी के लिए प्रसिद्ध है। कहा जाता है ग्वालियर की गायकी की गति "दरबारीसवारी" (Royal) की तरह धीर-गम्भीर डोलदार तक आगे होती है। अपनी इन्हीं विशेषता के कारण ग्वालियर घराना आज भी अपनी गुणवत्ता (quality) बनाए हुए है।

(2) आगरा घराना — आगरा घराना भी एक प्रसिद्ध घराना है। मुख्यता यह घराना ध्रुवपद गायकी का है। जिसके का कारण ध्रुपद-धमार के नोम-तोम आलाप और लयकारी का प्रभाव आगरा ~~घराने~~ घराने की ख्याल गायकी में भी रहता है।

इस घराने की गायकी में ग्वालियर घराना का काफी प्रभाव है। आगरा घराने की ~~[illegible]~~ ख्याल गायकी की नींव घग्घे खुदाबख्श को माने जाते हैं जो ग्वालियर के नत्थन खाँ के वंशज थे। इस घराने के कलाकार अपनी घराने के सम्बन्ध अकबरी दरबार के समकालीन सुजान खाँ से मानते हैं। इस घराने की शिष्य परम्परा उस्ताद नत्थन खाँ, फैयाज खाँ, विलायत हुसैन, जगन्नाथ बुआ पुरोहित पद्म भूषण डा० रतनजनकर आदि।

विशेषताएँ — यद्यपि ग्वालियर घराना से ही आगरा घराना बना किन्तु इसकी अपनी विशेषता के कारण स्वतंत्र तथा सर्व मान्य रहा।

- ग्वालियर घराने की तरह खुली किन्तु जोरदार आवाज इस घराने की प्रमुख विशेषता।
- ध्रुवपद के अनुरूप ख्याल गायकी में भी नोम-तोम आलाप, जबड़े की अधिक प्रयोग।
- चन्द्रिका पर अधिक महत्व, गायकी में बोलतान की विशेषता, ख्याल के अतिरिक्त ध्रुवपद, धमार और ठुमरी में प्रवीणता, तालतथा लयकारी पर विशेष अधिकार।

Continue Next Not-

Scanned with CamScanner